Date ...1997

PVI 1997

B.A. ...

Q.14. डेविड ह्यूम किस प्रकार सन्देहवादी या संशयवादी कहे जाते ... व्याख्या कीजिए।

(1) (01)

Ans :→ पाश्चात्य दर्शन मे डेविड ह्यूम एक अनुभववाद के समर्थक थे। डेविड ह्यूम दार्शनिक का जन्म 26 अप्रैल सन 1711 ई० में स्काटलैण्ड के मध्यम श्रेणीकेपरिवार में हुआ था। डेविड ह्यूम दार्शनिक बचपन से ही संघर्षशील थे। इनकी शिक्षा दिक्षा प्रारम्भिक रुप मे एडिनवर्ग विश्वविद्यालय में हुआ था। इन्होने ग्रीक तथा रोमन साहित्य का गहन अध्ययन किया। वे बचपन से ही स्वतंत्र विचार के व्यक्ति थे। कुछ दिनो के बाद उनके विचार मे परिवर्तन हुआ और रुढ़िवाद तथा परम्परागत अन्ध-विश्वास कोकटु आलोचक बन गये। फ्रांस में जाकर इन्होने दर्शन का गम्भीर अध्ययन करके मानव स्वभाव पर निबन्ध (Treatise of human nature) ग्रन्थ लिखा बाद में इन्होने अनुभववाद के ज्ञान का काफी प्रचार प्रसार किया। डेविड ह्यूम दार्शनिक के समय में अनुभववाद परम सीमा पर पहुँच गई। ह्यूम से पहले अनुभवाद के विचारों की व्याख्या जॉन लॉक, जार्ज बर्कले इत्यादि ने अनुभववाद का काफी प्रचार प्रसार किया फिर भी अनुभववाद के ज्ञान का एक मात्र स्रोत अनुभव है। इसकी विशद व्याख्या ह्यूम ने किया था। ह्यूम का कहना था कि संवेदन तथा स्वसंवेदन ही हमारे ज्ञान के दो वातायन है। सम्वेदन हमें बाह्य संसार का ज्ञान प्राप्त कराता है तथा स्वसंम्वेदन से हमें आन्तरिक अनुभूतियों (सुख-दुख इत्यादि) का ज्ञान प्राप्त कराता है। ह्यूम ने ज्ञान का दो साधन माना है - (i) संस्कार (Impression) और (ii) विज्ञान (Idea).

यहाँ विज्ञान का तात्पर्य 'idea' से है। विज्ञान तथा idea के बारे में अनुभववाद के जननायक दार्शनिक जॉन लॉक और जार्ज बर्कले ने भी स्वीकार किया है, लेकिन संस्कार का प्रयोग अनुभववाद ने यदि किसी ने उजागर किया है तो वह दार्शनिक डेविड ह्यूम है। संस्कार के बारे में ह्यूम दार्शनिक का कहना है कि सम्वेदना तथा स्वसम्वेदना संस्कार

Scanned with CamScanner

का रूप है। हमारी इन्द्रियाँ ज्ञान के स्रोत है जो बाह्य तथा आन्तरिक के रूप में परिलक्षित है। बाह्य इन्द्रिय जैसे- चक्षु (आँख) श्रवण (कान) घ्राण (नाक), रसना (जीभ) तथा त्वचा इत्यादि जिससे रूप, शब्द गन्ध, रस, स्पर्श का ज्ञान प्राप्त होता है। आन्तरिक इन्द्रियों का तात्पर्य मन से है। जिससे सुख-दुःख का ज्ञान प्राप्त होता है अर्थात बाह्य इन्द्रियाँ संवेदना का रूप होती है और स्वसंवेदना में सुख-दुःख का ज्ञान सम्मिलित जिसे ह्यूम ने संस्कार दिया है। अतः इन दोनों बाह्य इन्द्रियों, और आन्तरिक इन्द्रियों को ह्यूम ने संस्कार की संज्ञा दी है। ह्यूम के अनुसार विज्ञान संस्कार अपना प्रतिबिम्ब या प्रतिरूप (copy) मन में छोड़ते है इसलिए इन्हे विज्ञान कहा गया है। विज्ञान को संस्कार का प्रतिरूप कहा गया है। जैसे- सर्दी, गर्मी, सुख-दुःख आदि का हम स्वयं (स्वतः) अनुभव करते है। अर्थात संस्कार के अन्तर्गत सजीव, स्पष्ट, प्रबल बाद में से क्षीण हो जाते है तथा अपना प्रतिरूप ही मानस पटल पर छोड़ देते है इन्हे ही विज्ञान कहा जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि विज्ञान संस्कार पर निर्भर है। (संस्कार प्राथमिक है तथा विचार गौण है) ह्यूम विज्ञान को दो रूपों में माना है- (i) सरल और (ii) मिश्रीत।

ह्यूम का सन्देहवाद या संशयवाद :→ ह्यूम के सन्देहवाद या संशयवाद पाश्चात्य दर्शन में काफी विवाद का विषय के रूप में चर्चित हुआ है। पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का अवलोकन करने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि जॉन लॉक का अनुभववाद का अन्त होते हुए भी ह्यूम ने अनुभववाद के समाप्ती के बाद ही सन्देहवाद या संशयवाद के घेरे में लिप्त हो गया। चूंकि जॉन लॉक दार्शनिक ने कहा था कि "हमें कोई भी ज्ञान जन्मजात नही होता क्योंकि जन्म से मानव का मस्तिष्क एक कोरे कागज के समान रहता है, जिस पर कुछ भी लिखा नही रहता।" संवेदना तथा स्वसंवेदना ही ज्ञान के वातायन है जिससे मन रूपी अंधेरे कमरे में ज्ञान का प्रकाश

मानता है। अर्थात् अनुभव ही हमारे ज्ञान का जनक है। (इन्द्रियानुभव को ही ज्ञान का मापदण्ड मानते हुए जॉन ने द्रव्य, आत्मा, परमात्मा आदि सभी को अनुभव से या परे विषयों को मानलिया अर्थात् अनुभव से परे विषय का ज्ञान सिखलाता है।

जार्ज बर्कले दार्शनिक का कहना है कि "हमारा ज्ञान विज्ञानों तक सीमित है, परन्तु विज्ञान के कारण स्वरूप आत्मा और परमात्मा को वे मानते है। इसलिए जार्ज बर्कले भी अनुभववादी है।"

ह्यूम दार्शनिक शुद्ध अनुभववादी है। यदि हमारा ज्ञान इन्द्रियानुभव तक ही सीमित है तो अनुभवेतर विषयों (आत्मा, परमात्मा आदि) की प्रामाणिकता तो सन्दिग्ध होगी ही। अतः सन्देहवाद तो अनुभववाद का स्वाभाविक परिणाम है। ह्यूम अपने को स्वयं सन्देहवादी रूप में प्रकट करते है क्योंकि ह्यूम दार्शनिक के अनुसार सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान असम्भव मानते है। उनका कहना है कि यदि इन्द्रियानुभव ही हमारे ज्ञान का मापदण्ड है तो अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति नही हो सकती। इसी कारण उन्होने कार्य-कारण जैसे सर्वमान्य सिद्धान्त को सम्भाव्य बतलाया है, अनिवार्य नही। यदि हमारा ज्ञान केवल विशेषों तक ही सीमित है तो सामान्य कोरी कल्पना है। इसीप्रकार हमारा ज्ञान यदि संस्कार और विज्ञान तक सीमित है तो आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हमें नही प्राप्त हो सकता। अतः कार्य-कारण, द्रव्य, परमात्मा इत्यादि सभी पर सन्देह करने के कारण हम निश्चय रूप से ह्यूम को सन्देहवादी कह सकते है। ह्यूम दार्शनिक स्वयं सन्देहवादी के रूप में प्रकट करते हुए स्पष्ट करते हुए कहते है कि सन्देहवाद यथार्थ में सदा के लिए किसी को सन्तुष्ट नही कर सकता।

ह्यूम के सन्देहवाद का एक विशेष अर्थ है कि ह्यूम अपने सन्देहवाद के

Scanned with CamScanner

सहारे अनुभवेतर विषयों में मानव बुद्धि की अक्षमता बतलाते है। अनुभव से परे विषयों को हम तर्क या प्रमाण से नही जान सकते। इस प्रकार मानव ज्ञान की सीमा निश्चित है। हम जानते है कि बुद्धिवाद ने मानव ज्ञान को दृश्य, अदृश्य, ज्ञात, अज्ञात सभी क्षेत्रों में पहुँचा दिया था। ह्यूम दार्शनिक ने बुद्धिवाद के दावों को निस्सार बतलाते हुए यह सिद्ध कर दिया कि मानव ज्ञान केवल इन्द्रियानुभव तक ही सीमित है। अत: ह्यूम दार्शनिक के सन्देहवाद का तात्पर्य केवल मानव बुद्धि की अनुभवेतर विषयों में अक्षमता का प्रदर्शन है। ह्यूम आस्था और विश्वास का निषेध नही करते है जबकि हमारा दैनिक जीवन तो विश्वास पर ही चलता है, क्योंकि ह्यूम विश्वास पर आधारित मान्यताओं को पूर्णत: ध्वस्त नही करते परन्तु साथ ही साथ उनका बौद्धिक चीजों का समर्थन नही किया जा सकता। ह्यूम दार्शनिक अपने सन्देहवाद के द्वारा केवल परम्परागत अन्धविश्वास से समाज को मुक्त करना चाहते है। अत: ह्यूम के सन्देहवाद का अर्थ है अनुभवेतर विषय मानव बुद्धि के परे है इसकी प्रामाणिकता सन्दिग्ध है, अत: धर्म और तत्त्वमीमांसा के विषयों में वे कुछ दूर तक ह्यूम को सन्देहवादी की संज्ञा दी जाती है। लेकिन गणित प्राकृतिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान की यथार्थता में इन्हें सन्देहवादी के घेरे से वंचित किया जाता है।

ह्यूम दार्शनिक ने सन्देहवाद अथवा संशयवाद को अपने अनुभव के आधार पर द्वारा अन्य दार्शनिको के भाँति भिन्न मानते है। ह्यूम का कहना है कि वस्तु-जगत के विषय में सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान सम्भव नही है। इसका कारण है कि ज्ञान का एकमात्र साधन सम्भव है और किसी भी वर्ग भूत, वर्तमान और

भविष्य तीनों काल के वस्तुओं का असम्भव है। वस्तु-जगत के विषय में सम्भाव्य ज्ञान सम्भव है। वि निश्चित, अनिवार्य सार्वभौम नही। पाश्चात्य दर्शन मे ह्यूम का सन्देहवाद है।

ह्यूम के सन्देहवाद के विरुद्ध कुछ दार्शनिकों का कहना है कि कार्य-कारण सिद्धान्त के आधार पर कुछ वस्तुओं के अनुभव से ही सबके विषय में यथार्थ सार्वभौम निष्कर्ष की स्थापना की जा सकती है, लेकिन ह्यूम दार्शनिक का कहना है कि अनिवार्य सम्बन्ध के रूप मे कार्य-कारण संबंध अनुभव से सिद्ध नही है। इस तरह की अनिवार्यता कभी अनुभूत नही होती। इसलिए कार्य-कारण नियम के आधार पर अनिवार्य या सार्वभौम निष्कर्ष निकालना प्रमाण संगत नही है। किसी वस्तु के अतिरिक्त ज्ञान का दूसरा पक्ष ज्ञेय प्रत्ययों का सम्बन्ध और उस क्षेत्र मे सार्वभौम ज्ञान सम्भव है। उसके प्रत्ययों का विश्लेषण करके उनकी गुणवाचकता में निहित रहता है उसे स्प किया जाता है। लेकिन इस क्षेत्र का अध्ययन तर्कशास्त्र और गणि विज्ञान में किया जाता है। तर्कविज्ञान और गणित विज्ञान के अध्य के विषय में ह्यूम सन्देहवादी के घेरे में नही आते है, क्योंकि अनुभववाद का चरम विकास ह्यूम के दर्शन मे होता है और इसके तीन परिणाम होते हैं -

(i) सर्वांगवाद (ii) मनोवैज्ञानिक परमाणुवाद (iii) सन्देहवाद।

ये तीनों दोषपूर्ण है क्योंकि ह्यूम के अनुभववाद के परिणामों में सन्देहवाद को लेकर दर्शन के इतिहास में काफी विवाद हुआ है। कभी कभी अन्य दार्शनिक ह्यूम को आत्म-घातक के नाम से पुकारते है। वे सन्देहवादी केवल अनुभविक ज्ञान के विषयों में है क्योंकि ह्यूम का कहना है कि कोई भी अनुभविक प्रतिज्ञप्ति सार्वभौम और अनिवार्य रूप में सत्य नही होती वह केवल सम्भाव्य हो सकती है। व्यवहार के माने में ह्यूम का सन्देहवाद अवश्य ही बाधक है क्योंकि ह्यूम दार्शनिक ने

Scanned with CamScanner

(6)

अपने स्वयं सन्देहवाद के बारे में कहा है कि अनुभविक ज्ञान के विषय में बुद्धि द्वारा किया गया विवेचन का परिणाम है लेकिन इस अन्दर एक सहज प्रवृति है जो व्यवहार का संचालन करती है। अन्य दार्शनिकों का कहना है कि सन्देहवाद भी व्यवहारिक और सैद्धान्तिक दोनों दृष्टियों से अग्राह्य लगता है व्यवहार के लिए विश्वास आवश्यक है किन्तु सन्देहवाद उसको नष्ट या कमजोर करता है इसलिए ह्यूम का कहना है कि सन्देहवाद एक सत्य सिद्धान्त है अथवा नही क्योंकि सार्वभौम कथन ही सत्य हो सकता है।

ह्यूम का दर्शन

सन्देहवाद या संशयवाद का पोषक है। वे सम्पूर्ण सृष्टि को चंचल और स्वप्न से भिन्न मानते है। उनके अनुसार सृष्टि मे स्थायी नाम की कोई चीज ही नही है क्योंकि सृष्टि और प्रकृति मे समय-समय पर बदलाव या परिवर्तन होते रहते है। इसलिए यह कहना कठिन हो जाता है कि समय परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन की दशा परिवर्तन के बाद विश्वास योग्य होगा कि नहीं यह विवादास्पद एवं चिन्ता खड़ा कर देता है। पाश्चात्य दर्शन मे ह्यूम दार्शनिक सम्पूर्ण बाह्य-जगत की सत्ता में सन्देह करते है। ह्यूम का व्यक्तिगत दर्शन और उनका विचार हमेशा सन्देहवाद और संशयरहित होता है। उनका कहना है कि अनुभव ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन जो संवेदनाओं के ऊपर आधारित होता है लेकिन आधुनिक युग की संवेदनाएँ पूरे वेग से धारा प्रवाहित बह रही है। वह चंचल और क्षणिक है। उनके परिवर्तन में किसी स्थायी आत्मा का अनुभव नही होता क्योंकि आत्मा की सत्ता सन्देहवाद है उसके अजर और अमर रहने का प्रश्न ही नही उठता।

ह्यूम दार्शनिक का कहना है कि कार्य कारण सिद्धान्त और प्राकृतिक समरुपता सिद्धान्त के विषय में वस्तुत: सत्य है लेकिन जहाँ पर भौतिक पदार्थ आत्मिक पदार्थ दोनों का अभाव होता है साथ ही नियम अनिश्चित और सम्भावना मात्र होता है तब प्राकृतिक नियमों पर नैतिक दृष्टिकोण

(06)

मे विश्वास करना सन्देहास्पद होता है। ह्यूम की दृष्टि मे ... देश काल (Space, time) और आत्मगत की उपस्थिति है जो उस परिस्थिति मे स्थित पदार्थों को वस्तुगत कैसे मान लिया ... जहाँ पर ईश्वर की सत्ता अनुभवगम्य नही है, धर्म, अन्धविश्वास की उपज है। धर्मशास्त्रो के द्वारा मिला हुआ ज्ञान अनिश्चित और संदेहास्पद होता है तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा के भी ज्ञान अनिश्चित होते है। उस समय मनुष्य को चिंता रहित जीवन व्यतीत करना उचित नही प्रतीत होता है। इसलिए ह्यूम दार्शनिक का यह कहना सही है कि "सत्य की प्राप्ति मे हम असमर्थ है।" इसके अतिरिक्त इस बात से हम अवगत होते है कि पूर्ण सन्देहवाद एक आत्मघातक सिद्धान्त है यदि सब कुछ सन्देह से भरा हुआ है तो सन्देहवाद भी सन्देह से भरा हुआ सिद्ध होता है। इसलिए हम ह्यूम को पूर्ण सन्देहवादी या संशयवादी की दृष्टि से नही देख सकते क्योंकि ह्यूम का कथन है कि "जिस किसी ने भी पूर्ण सन्देहवाद की आक्षेपो का खण्डन चाहा है वह वस्तुतः बिना शत्रु के लड़ा है।" चूँकि ह्यूम का ... है कि बुद्धि एक बादल कि तरह है जो सन्देहवाद के घेरे मे होता है, बादलों को हटाने के लिए प्रकृति स्वयं वर्षा के रुप मे काम करती है। उसी प्रकार सन्देह रुपी बुद्धि का व्यक्ति मानसिक तनाव को ढिला करके या किसी ~~व्यापार~~ अथवा अन्य सजीव आकर्षक अनुभव के द्वारा जो तत्क्षण उन कल्पनाओ को भुला देता है।

अर्थात दार्शनिक विवाद, सन्देह रूपी भ्रांति से मुक्ति दिला देना संशयवाद का एक रुप होता है। आगे ह्यूम अपने शब्दो मे कहते है कि "उस सन्देहवाद के द्वारा भ्रान्ति से मुक्ति दिला देना अर्थात मै पुनः खाना खाता हूँ, चौपड़ खेलता हूँ, वार्तालाप करता हूँ, और मित्रों के बीच आनंद लूटता हूँ, और तीन-चार घंटे के आनंद मस्ती के बाद जब मै अपने विचारो को देखता हूँ तो आभास होता है कि इतने ~~निर्जीव~~ नीरस अचेतन और हास्यास्पद दीख पड़ते है कि जिससे उलझन समाप्त हो जाती है।"

(8)

आलोचना :→ पाश्चात्य दर्शन मे ह्यूम का सन्देहवा[illegible] प्रकृति रुपी बादल की तरह है। जो ज्ञान रुपी वस्तु [illegible] हो जाता है अन्य दार्शनिको का कहना है कि ह्यूम [illegible] चिन्तन में सन्देहवादी लेकिन व्यवहार मे वे सन्देहवादी [illegible] ज्ञान की सम्भावनाओं में उनका विश्वास है क्योंकि प्र[illegible] नियमो मे उसके नियमो को माना जाय तो हमारा व्य[illegible] जीवन सम्भव नही हो सकेगा विज्ञान की प्रगति रुक जा[illegible] जो व्यावहारिक जीवन का वरदान है।"

ह्यूम का कहना [illegible] बुद्धि और अनुभव बराबर ध्यान मे रखना चाहिए क्योंकि [illegible] प्राप्ति के अन्य समर्थ साधन है। जैसे- सहज बोध तथा प्र[illegible] नात्मक विधि से निश्चित ज्ञान मिल सकता है। गणित वि[illegible] एवं प्रकृति विज्ञान में यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है लेकिन गणि[illegible] विज्ञान की अपेक्षा प्रकृति विज्ञान का ज्ञान सापेक्ष होता है आधु[illegible] युग मे समय परिवर्तन के साथ-साथ विज्ञान के उन्नति के साथ [illegible] नये चीजों का खोज तथा आविष्कार हो रहा है इसलिए विज्ञा[illegible] मे जो आज सत्य है कल भी वह सत्य रहेगा यह जरुरी नही है क्योंकि विज्ञान के ज्ञान भी हमारी मानसिक आदत, कल्पना औ[illegible] अभ्यासजन्य प्रवृतियो पर आधारित है। इसलिए प्राकृतिक विज्ञान [illegible] नियम भी सत्य है उसी तरह मानवीय आचरण के भी नियम है जिसका विषद व्याख्या (Social Science) मे किया जाता है।

ह्यूम दार्शनिक का इतिहास एक सौ वर्षो तक प्रमाणिक रुप मे माना जाता है। और इसी के इतिहास के बाद आधुनिक यु[illegible] का प्रथम इतिहासकार साबित हुआ है। कुछ विचारको कहना है कि आधुनिक युग के प्रथम इतिहासकार की संज्ञा यदि ह्यूम को दी [illegible] ही दिया जाय तो अतिश्योक्ति नही होगी क्योंकि अर्थशास्त्र राजनीतिक शास्त्र, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि के [illegible]

अर्थात देन ह्यूम दार्शनिक की है। ह्यूम ने अपने नीतिशास्त्र के सिद्धान्त में मनुष्य को केन्द्र रूप माना है क्योंकि मनुष्य जैसा चाहे अपने को बना सकता है। आचरणों को वही नियंत्रक है। मनुष्य अपने चरित्र बल से देश और समाज का कल्याण भी कर सकता है जीवन का सुख निश्चित जिन्दगी नहीं है। ह्यूम का विश्वास आत्मा में भी है यदि आत्मा नहीं होती तो नीतिशास्त्र भी नहीं होता और यदि आत्मा का जन्म नहीं तो इच्छा-स्वातंत्र्य का रूप भी नहीं होता। मनुष्य जीवन में संकल्प का रूप किस तरह करेगा। भूतकाल की स्मृतियों और वर्तमान के तथ्यों को किस प्रकार सही रखेगा। भविष्य का नवीन निर्माण कौन करेगा? इत्यादि प्रश्नों पर प्रश्न चिह्न खड़ा हो जाता है। ह्यूम का कहना है कि आत्मा की सत्ता में अविश्वास नहीं है क्योंकि उनका कहना है कि ज्ञान अनुभव से नहीं हो सकता है काण्ट किस तरह तत्वमीमांसा प्रश्नों को वे आस्था की सीमा में रखते है। ह्यूम धर्म का विरोध अवश्य किया लेकिन उस धर्म का जिसमें मनुष्य का मूल्य नहीं रहता है। अतः ह्यूम दार्शनिक उस धर्म के प्रति उदार की भावना रखता था जिस धर्म में मनुष्य-मनुष्य को प्रेम के सूत्र में बाँधा जा सकता है।

निष्कर्ष :→ इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाश्चात्य दर्शन में ह्यूम दार्शनिक अनुभववादी होते हुए भी सन्देहवादी और संशयवादी के घेरे में लिप्त होते हुए भी अपने दर्शन को कुछ मौलिक रूप के सिद्धान्तों में अपनाया है। इनका मौलिक सिद्धान्त संवेदनवाद, प्रत्ययों का चंचल प्रवाह, साहचर्य के नियम संबन्धों का सिद्धान्त सहजबोध प्रश्नात्मक विधि, ज्ञान प्राप्ति नीतिशास्त्र और धर्म विज्ञान, बौद्धिक और ~~मनोविज्ञान~~ मनोविज्ञान दृष्टिकोण से भी अनुभव के ज्ञान प्राप्ति में लिप्त होना, साथ ही देश काल तथा आत्मगत प्रकृति समरूपता तथा कार्य-कारण

Scanned with CamScanner

नियमों को अपनाना ह्यूम को सन्देहवादी और संशयवादी के रूप से अलग करता है।

कुछ जैनी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि "ह्यूम को सही अर्थों में आभाषवादी, प्रत्यक्षवादी अज्ञेयवादी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं।" इस प्रकार ह्यूम दार्शनिक अपने नीतिशास्त्र के सिद्धान्त में नीतिवाद तथा इच्छा-स्वातंत्र्य का समर्थन करता है। अतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में ह्यूम दार्शनिक अनुभववाद का समर्थक होते हुए भी साथ ही सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान को मानते हुए भी सन्देहवाद और संशयवाद के नाम से जाना जाता है।

The End